ईश्वरबाद

जब भगवान् कुछ नहीं करता तो और कौन करता है? एक रहस्य है। जब किसी आदमी को हम कुछ करता हुआ देखते हैं, मसलन हमने कहा कि फलाने ने हाथ मिलाया, तो हमने क्या देखा? हाथ का हिलना देखा, वास्तव में हाथ हिलता है? हाथ के अंदर क्या शक्ति है कि वह हिल सके? कोई शक्ति नहीं। जिस शक्ति के ज़रिए से हिला वह तो हमें नज़र नहीं आती। उसके बिना यह हिल भी नहीं सकता।

यह जो शक्ति हमारे शरीर में है, जिस शक्ति के द्वारा हम बोलते हैं, हिलते हैं, उठते हैं, बैठते हैं, सब कुछ करते हैं, मगर वह शक्ति हमें नज़र नहीं आती। यह कल्पना है हमारे अंदर कि फलां ने हाथ हिलाया, पैर हिलाया। हाथ कभी हिल ही नहीं सकता, पैर कभी हिल ही नहीं सकता। मगर जिस शक्ति के ज़रिए हाथ हिला, पैर हिला, वह हमें नज़र नहीं आती।

क्या उस शक्ति के अंदर हाथ-पैर हिलना सिद्ध होता है? उस शक्ति के अंदर भी हाथ पैर हिलना सिद्ध नहीं होता! वह तो एक व्यापक पदार्थ है, उसके अंदर हिलना-डुलना सिद्ध नहीं होता है। जो व्यापक पदार्थ होगा, उसके अंदर हिलना-डुलना सिद्ध नहीं होगा, किसी भी सूरत में। व्यापक में यह कैसे सिद्ध होगा?

यह व्याप्य पदार्थ भी स्वयं हिल नहीं सकता। डुल नहीं सकता। यह जो हमारा हाथ है यह हिल-जुल नहीं सकता। वह शक्ति जो हाथ हिलाता है, वह हमें नज़र नहीं आता, मगर वह शक्ति के अंदर हाथ हिलना भी सिद्ध नहीं होता! यह बड़ा विचित्र तमाशा है! ऐसा विचित्र तमाशा चलता है सृष्टि के अंदर! जितने भी मनुष्य जो कुछ भी करता है, हमें ऊपर करता हुआ नज़र आ रहा है, मगर वह कुछ नहीं कर रहा। न कुछ कर सकता है। अभी हम बोल रहा है। वास्तव में यह शरीर बोल नहीं सकता किसी भी सूरत में। इसके अंदर क्या शक्ति है बोलने की?

यदि शरीर बोल सकता है तो मुर्दा भी बोलना चाहिये। शरीर बोल नहीं रहा, फिर कौन बोल रहा है? इसके अंदर छिपा हुआ जो आत्म-तत्व है वह भी नहीं। फिर यह बोलना क्या सिद्ध हुआ? यह कुछ भी सिद्ध नहीं होता! इसी को कल्पना कहते हैं। सब हमारी कल्पना-मात्र है। कल्पना ही तुम्हें सृष्टि की शक्ल में खड़ा हुआ नज़र आता है! इसके अंदर

यह जो क्रिया-शक्ति है वह हमें नज़र नहीं आता! यह क्रिया-शक्ति जो है यह कोई व्याप्य नहीं है, यह तो व्याप्यक है। जब तुम हिलने लगता है तो हमने कल्पना कर लिया कि तुम हिल रहा है।

वास्तव में वह हमारी कल्पना ही है जो हिल रही है। तुम कोई चीज़ नहीं। तुम्हारी या हमारी कल्पना है। मगर जो उसके अंदर चैतन्य-शक्ति है वह तो हमें नज़र नहीं आता है। नज़र न आने के बावजूद भी उसका अनास्तित्व या न होना तो सिद्ध नहीं होता। वह न हो तो किसी भी वस्तु का अस्तित्व नहीं होगा। वह जो चैतन्य-शक्ति है, उसके अंदर कोई हिलना-डुलना नहीं होगा। वह तो हर स्थान पर समान-रूप से रहता है। फिर हम उसे महदूद (सीमित) बना लेते हैं, कल्पना के ज़रिए से। कैसे महदूद बनाया? तो हमने कह दिया, फलाने ने कहा, फलाने ने चला, फलाने ने किया, फलाना बैठा, फलाने ने खाया, फलाने ने पिया।

यह सब हमारी कल्पना है। हम शरीर के अंदर कल्पना करके, उसके अंदर आरोपन करके उसे महदूद बनाता जाता है। फलां ने किया, फलां ने देखा, फलां ने सुना। फलां ने कहा, फलां ने छका इत्यादि हम कहते रहते हैं। वास्तव में यह कुछ नहीं हो रहा? (हंसते हुए,) होता कुछ भी नहीं, क्या होता है इसमें? वास्तव में तुम कुछ नहीं कर रहा! वास्तव में हम आरोपन करते हैं कि यह कर रहा है। यह मानना ही करना बना हुआ है! यह मानना छोड़ दो तो सृष्टि में किसी ने न कुछ किया न कराया, कुछ भी नहीं होता।

वह स्थिति एक अखण्ड-स्थिति है वह अखण्ड-स्थिति ही कायम रहेगा, शेष कुछ भी कायम नहीं रहेगा। उस आखण्ड-चैतन्य को हमने कल्पना करके महदूद बना दिया है। हमने कहा या किसी ने कहा कि फलां चला। क्या चलने की क्रिया उसी के अंदर है? अगर चलने की क्रिया उसी में है तो और कोई नहीं चल सकता। दूसरा भी चलता है, तीसरा भी चलता है, तमाम संसार चलता है। हम एक जगह पर एक आदमी के अंदर कैसे आरोपन करते हैं कि उसने यह किया वह किया?

एक के ऊपर हम कैसे ठोस सकते हैं यह क्रिया? जब चलना क्रिया समष्टिगत है, सब जगह के अंदर यह चैतन्य-शक्ति है, मगर वह चैतन्य के ज़रिए से होने के बावजूद भी हम उसे महदूद बना देते हैं। कल्पना के ज़रिए से महदूरद बना देते हैं। महदूद बनाने पर हम कर्त्ता बन बैठते हैं। कर्त्ता होने से अहंकार हो जाता है, अहंकार होने से वह कर्म बनने

लग जाता है। क्रिया-भाव के नष्ट होने पर वह कर्म बन जाता है। क्रिया ही हमारी कल्पना के कारण कर्म बनता है। कर्म ही बंधन का कारण बनता है। कर्म वास्तव में हमारी कल्पना है, कल्पना के सिवा कुछ भी नहीं।

यह कल्पना से संस्कार पैदा हुआ है। यह चीज़े जितनी भी हमें नज़र आती है, यह कल्पना है। कल्पना कहां से पैदा होती है? संस्कार से। संस्कार क्या है? संस्कार एक प्रकार की पिक्चर है। संस्कार छोटा छोटा पिक्चर है। पिक्चर को हटा दिया जाए तो सृष्टि में कुछ भी सिद्ध नहीं होता। यदि तुम सुनते, उठते, बैठते, खाते-पीते हो, यह सब पिक्चर होती है। पिक्चर के ज़रिए से हम अनुमान लगा लेते हैं कि यह फलाना काम कर रहा है। पिक्चर न हो तो किस तरह सिद्ध कर सकते हैं कि फलाना काम कर रहा है?

कोई लिख रहा है, वह लिखने की पिक्चर है, तभी जाकर उसे वह लिखना कहते हैं। लिखने की पिक्चर है तभी जाकर बोलता है, जब चलने का पिक्चर है तभी जाकर चलता है। तभी बैठता है। पिक्चर ही है यह सारी की सारी जितनी सृष्टि है। यह जितना भी पृथ्वी पर बड़ा क्रिया हम देखता है या आरोपन करता है, फलां ने फलां काम किया, यह सब पिक्चर ही है।

यह पिक्चर कहां रहती है? बुद्धि में। तमाम सृष्टि की। इसी को संस्कार कहते हैं। वास्तव में यह पिक्चर के अंदर खुद कोई ताकत नहीं होती है कि वह हिल सके, डुल सके, कुछ भी कर सके। पिक्चर और आत्मा का सम्बंध होने पर उस पिक्चर के अंदर हरकत पैदा हो जाती है। यह सृष्टि की शक्ल में हमें भासने लग जाती है। जल की शक्ल में, वायु की शक्ल में, पृथ्वी की शक्ल में, आकाश की शक्ल में, महतत्व की शक्ल में या भिन्न भिन्न शक्लों में जो कुछ सृष्टि की शक्ल में खड़ा हमें दिखाई देता है, उसके अंदर पिक्चर और आत्म-चैतन्य का सम्बंध होने के कारण जो पिक्चर के अंदर हरकत हो जाती है, उसी को हम कहते हैं-करना। उसी को हम कर्म कहते हैं।

कर्म करने पर हम अभिमान कर लेता है। अभिमान होने पर उस शक्ति को हम विचलित मानकर कह देता है, हमने करा। जैसे कहा, फलाने ने करा, या राम सिंह चला। 'राम सिंह चला' कहने पर, उस राम सिंह के दायरे के अंदर आए हुए चैतन्य को हमने सिरफ महदूद बना दिया। वास्तव में वह महदूद नहीं। कल्पना के ज़रिए से उसे महदूद बना लिया।

जैसे जहां-तहां भी कोई बन जाए, उसके अंदर भी चैतन्य होना लाज़मी है। जैसा हमारा शरीर है, इसके अंदर भी चैतन्य व्यापक होने की वजह से आगे जहां-जहां कुछ भी बन जाए तो उसमें चैतन्य व्याप्क होगा। जैसे घड़ा बन जाए तो उसमें आकाश अपने आप बन जाता है। इसी प्रकार जहां तहां भी शरीर बन जाता है, उसके अंदर चैतन्य हो जाता है। जब उसके अंदर चैतन्य हो जाता है, उसके अंदर अहंकार हो जाता है। अहंकार के कारण चैतन्य को हम महदूद बना लेता है। महदूद बना लेने के बाद कहते हैं, फलाना राम सिंह चला या कृष्ण सिंह चला। यह चला इत्यादि कह देता है। वास्तव में ऐसा कुछ भी नहीं। यह तो बुद्धि में पिक्चर छिपा हुआ है। बुद्धि एक पिक्चर होने के सिवाय कुछ भी नहीं।

इसी के मुत्तालिक गहरा अनुसंधान करके देखो। तो बुद्धि कुछ भी नहीं सिवाय पिक्चर के! बुद्धि तभी तक सिद्ध होता है जब तक इसके पीछे यह सृष्टि की पिक्चर छिपा होता है! पिक्चर को दूर कर दो तो बुद्धि का कोई अस्तित्व नहीं! इसके अंदर यह पिक्चर न हो तो यह सृष्टि बनेगा नहीं। यदि पिक्चर को तुम बिल्कुल खत्म करके देखो तो बुद्धि भी कुछ चीज़ नहीं। इससे सिद्ध होता है कि बुद्धि ही पिक्चर की शक्ल में खड़ा है या पिक्चर ही बुद्धि की शक्ल में खड़ा है, यह जो बुद्धि के पिक्चर को हटाने से बुद्धि का कोई अस्तित्व नहीं रहता। बुद्धि को हटाने से पिक्चर का भी कोई अस्तित्व नहीं रहता। इससे यह सिद्ध होता है कि ये दोनों ही कल्पना हैं, वास्तविकता या सच्चाई नहीं।

जिस चैतन्य-शक्ति को प्राप्त करके यह बुद्धितत्व काम करता है यह चैतन्य-शक्ति व्यापक है। सब जगह के अंदर और सब में एक जैसी है। हर जगह के अंदर, हर अणु-अणु के अंदर वह भरी हुई है। उसी की कल्पना करके, पिक्चर का कल्पना करके यह महदूद बन गया। महदूद होने के कारण वह चैतन्य-शक्ति हमें नज़र नहीं आता। जैसे मैने पहले कहा, जब राम सिंह चलता है तो हम कहते हैं राम सिंह चल रहा है। वास्तव में 'चलना' क्रिया राम सिंह की हो तो कृष्ण सिंह चल नहीं सकता है। या और भी जो कोई है वह चल नहीं सकता। सृष्टि के अंदर हर चीज़ चल रहा है। राम सिंह के ऊपर जो हमने आरोपन किया, वह तो हमारी बुद्धि की कल्पना-मात्र है। इसी प्रकार व्यक्तिगत-रूप से जितनी भी क्रिया हमें नज़र आती है वह सब हमारी बुद्धि की कल्पना है। बुद्धि की कल्पना-मात्र है।

कल्पना किसको कहते हैं? पिक्चर को ही तुम कल्पना कह सकते हो। जिस चीज़ की कोई शक्ल न हो, उस की तुम कल्पना ही नहीं कर सकते। बुद्धि किसकी कल्पना कर सकती है? जिसके अंदर पिक्चर हो। जिसके अंदर पिक्चर न हो तो उसकी कल्पना तुम किसी भी सूरत में नहीं कर सकते। बुद्धि यदि कल्पना करता है, पिक्चर को लेकर कल्पना करता है। बुद्धि के साथ आत्म-चैतन्य का सम्बंध हो जाता है तो उसके अंदर हरकत पैदा हो जाती है। उसी को हम कल्पना कहते हैं।

वास्तव में कल्पना क्या है? कल्पना भी एक पिक्चर ही है न, उस पिक्चर के अंदर हरकत पैदा होती है। उसे हम कल्पना कहते हैं। उसे मन कहो, कुछ भी कहो, पिक्चर के अंदर ही हरकत पैदा होता है।

किसी की भी कल्पना तुम करते हो तो देख लेना उसके अंदर पिक्चर होगा। रूप बिना कोई कल्पना नहीं होगा। हर एक के लिए कुछ न कुछ कोई रूप होगा, चाहे खाए हुए चाहे पिए हुए। शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध-इन पांचों चीज़ों का भी कोई रूप है। रूप न हो तो इन्हें हम ग्रहण नहीं कर सकते। तो शब्द को भी हम जानता है, स्पर्श को भी हम जानता है, रूप को भी हम जानता है, रस को भी जानता है और गंध वगैरह को हम जानता है। रूप को लेकर ही हम कोई कल्पना करता है। इससे सिद्ध हुआ कि पिक्चर को ही कल्पना कहते हैं। पिक्चर के अंदर हरकत के पैदा होते ही, उसे हम कल्पना कहता है। पिक्चर न हो तो कल्पना भी कुछ न होगा।

थोड़ी देर के लिए मान लें हमारे अंदर पिक्चर का बिल्कुल अभाव हो तो फिर क्या बनेगा? कोई हरकत हो सकता है? सृष्टि हो सकता है? हरकत के बिना सृष्टि नहीं होगा। जितनी भी यह सृष्टि तुम्हें भासती है यह हरकत के ज़रिए से होगा, पिक्चर के और आत्मा के सम्बंध से पिक्चर के अंदर हरकत पैदा होते ही सृष्टि खड़ा हो जाएगा। सृष्टि भी तो एक पिक्चर है न। सूरज का पिक्चर है, चांद का पिक्चर है, पृथ्वी मण्डल, तारामण्डल और जितना भी पदार्थ तुम्हें दिखाई देता है, सब का पिक्चर है।

अभी एटम आदि सूक्ष्म पदार्थ जो है, एटम का भी पिक्चर है, पिक्चर के बिना एटम को हम देख भी नहीं सकते किसी भी सूरत में। जिसकी शक्ल न हो तो उसे देखा किस तरह जा सकता है? चाहे दूरबीन से देखा, या किसी अन्य चीज़ से देखा, उसका भेदन भी किया तो भेदन कैसे किया? जो उसकी शक्ल न हो तो उसका भेदन नहीं किया जा

सकता। तो यह एटम की शक्ल कहां से पैदा हुआ? वह भी एक पिक्चर है। (हंसते हुए) बुद्धि से। इसके अंदर भी वह पिक्चर छिपा हुआ है।

एटम कहां से पैदा हुआ? यह तो बुद्धि से पैदा हुआ। बुद्धि के अंदर ही उसका पिक्चर छिपा हुआ था, न हो तो उसे देखा ही नहीं जा सकता। बुद्धि के अंदर यदि एटम की पिक्चर न हो तो उसे देखा ही नहीं जा सकता। देखा किसने? क्या दूरबीन ने? दूरबीन ने देखा तो बुद्धि में ही देखा, दूरबीन खुद थोड़े ही समझ सकता है। बुद्धि ने ही देखा उसे। बुद्धि के अंदर ही पिक्चर है उसकी। अत्यंत सूक्ष्म होने की वजह से, हमने कहा कि वह बुद्धि से भी सूक्ष्म है, मगर वह बुद्धि से सूक्ष्म नहीं होगा। बुद्धि के अंदर छिपी हुई पिक्चर है। आत्म-चैतन्य के ज़रिए से उसमें हरकत पैदा होती है, हम नीचे से ऊपर तक अनुसंधान करते जाएं। परिणाम यही निकलेगा।

साईंटिस्टों का असूल क्या है कि नीचे से ऊपर अनुसंधान करते जाओ। साईंटिस्टों ने कहा कि एटम से ही सृष्टि बनता है। या हमारा न्याय-शास्त्र भी यह कहता है कि अणु, अणुवाद कहते हैं इसे, या एटम से ही सृष्टि बनता है। उसी एटम पर जाकर हम देखता है कि एटम की भी पिक्चर है। पिक्चर होने की वजह से उस पिक्चर के अंदर भी एक ऐसी शक्ति काम करती है जो एटम को भी शक्ति देती है।

बुद्धि के ज़रिए से ही उसके अंदर वह शक्ति मिलता है। जितने भी सृष्टि के अंदर, जिन जिन पदार्थों के अंदर तुम्हें शक्ति भासती है, यह बुद्धि के ज़रिए से ही शक्ति पहुंचती है। बुद्धि एक बीच में खड़ी हुई है, बाकी उसके ज़रिए से ही भिन्न भिन्न पदार्थों में शक्ति पहुंचती है। उस बुद्धि का यदि भेदन कर लिया जावे, बुद्धि के परदे को मिटा दिया जावे, तो वह डायरैक्ट (सीधा) हो जाएगी।

डायरैक्ट जब चैतन्य हो जाता है तो क्या शक्ल होगा? सृष्टि के रूप में? नहीं, नहीं यह पिक्चर-पुक्चर कुछ नहीं होगा। वह अखण्ड होगा। बुद्धि के साथ उस चैतन्य का सम्बंध होने के कारण वह बुद्धि का पिक्चर काम करने लग जाता है, यह बुद्धि ही संकल्प-विकल्प करता रहेगा। पिक्चर कोई संकल्प करता है तो वह सृष्टि के रूप में हमें भासने लग जाता है। वह पिक्चर ही हम देख रहा है। इस टाईम चैतन्य-शक्ति को हम देखता नहीं। जिस टाईम हम बुद्धि के परदे को खत्म कर देता है तो वह चैतन्य-शक्ति तो बदस्तूर कायम है न। वह तो मिट ही नहीं सकता। वह तो बदस्तूर जारी है। तो पिक्चर के

खत्म होने के बाद क्या होगा? अखण्ड-चैतन्य, अखण्ड-चैतन्य ही बचा रहेगा जिसे आत्म तत्व, आत्मा, ब्रह्म, परमात्मा कुछ भी कहा जाता है, वही बचा रहता है। मन कहो, बुद्धि कहो, कुछ भी कहो, पिक्चर को हटाकर मन-बुद्धि भी नहीं होगा। पिक्चर हटाकर यह सृष्टि हमें नहीं दिखती है। सृष्टि की सूक्ष्म शक्ल जो है वह मन-बुद्धि के अंदर रहती है।

यह सृष्टि का दो शक्ल है - स्थूल शक्ल और सूक्ष्म शक्ल। सूक्ष्म-रूप में मन बुद्धि के अंदर यह रहता है। यही स्थूल शक्ल बनाकर, पृथ्वी, जल, वायु, आकाश, अग्नि के रूप में तुम्हें नज़र आता है। वास्तव में यह पिक्चर के इलावा और कुछ भी नहीं। तो हमारा कहने का मतलब है कि इस दृष्टि से जब हम आगे बढ़ते जाएंगे तो एक अखण्ड-आत्मा ही बचा रहेगा। इसके अंदर कर्त्तव्य, अकर्त्तव्य कुछ भी नहीं होता। एक अखण्ड-स्थिति होती है। जिनको जब यह स्थिति मिल जाती है, तो सृष्टि में जो कुछ भी काम होता है वह काम अपने आप होता रहता है।

उस के अंदर उसे कोई महत्व नहीं होता, उसके अंदर कोई अहंकार नहीं होती। वह व्यापक ब्रहम् को महदूद नहीं बनाता। तुच्छ अहंकार या तमोगुण के अहंकार की वजह से वह महदूद बन जाता है। महदूद बनने पर यह पिक्चर के अंदर हरकत हो जाती है। सृष्टि की रचना कर लेता है। जब उस अहंकार को छोड़ देता है तो वह अखण्ड है। महदूद बनना छोड़ देता है, जो अखण्ड हो जाता है, उसमें कोई कर्म बनता नहीं न कोई ही है कर्म, न कर्म बन रहा है। न कर्म बनेगा। कुछ भी नहीं। यह एक ऐसी स्थिति कहो, मुक्तावस्था, ब्रह्मानंद कहो, कोई भी नाम उसे देते जाओ, वास्तव में उसके इलावा और कुछ भी नहीं है।

वास्तव में भगवान विलीन ने कहा कि मैं सृष्टि में रहते हुए भी कुछ नहीं करता। जैसे कि मैने उदाहरण देते हुए कहा कि तुम्हारे शरीर में हरकत होती है, मगर जिसके ज़रिए से हरकत होती है वह हमें नज़र नहीं आता। जिस शक्ति से वह हरकत करता है क्या किसी को नज़र आता है? बिल्कुल नज़र नहीं आता। वह शक्ति न हो तो क्या शरीर हिल सकता है? डुल सकता है? चल सकता है? बोल सकता है? नहीं, वह कुछ नहीं कर सकता, कुछ भी नहीं कर सकता। मगर वह शक्ति हमारी नज़र में नहीं पड़ रहा। हाथ चलना, पैर चलना, यह सब कल्पना होता है। यह सब पिक्चर होता है। पिक्चर के हिलने को ही हम कर्म कहते हैं! इसे ही हम कर्म कहता है। पिक्चर की हरकत ही, यह सृष्टि की हरकत है और कुछ भी नहीं।

लेकिन, मसलन यह समझो एक सिनेमा की शकल है वह। यह जो समष्टिगत शरीर है इसी की नकल है वह। जो सिनेमा में जाकर पिक्चर देखता है। यथार्थ में यह भी एक सिनेमा ही है, और कुछ भी नहीं। थोड़ी देर के अंदर खत्म हो जाता है। अखीरी उसके अंदर कोई हंसता है, कोई रोता है, कोई खेलता है, कोई मारता है, कोई पीटता है, कोई चुराता है, कोई ठगी करता है, कोई फरेब करता है, कोई कुछ और करता है।

यहां भी क्या करता है? यहां भी वही सब कुछ करता है, दोनों में फर्क कुछ भी नहीं। वह भी हम देखता है, यह भी हम देखता है। इसके अंदर भी हम सुखी दुखी होते हैं, उसके अंदर भी हम सुखी-दुखी होते हैं। होता तो वही है। अखीर में, कुछ भी नहीं। यह थोड़ी देर में ही नकल ही, पिक्चर के रूप में तुम्हें दिखा देता है। उसके मुकाबले में यह यथार्थ नज़र आएगा क्योंकि यह सृष्टि तुम्हें कुछ लम्बा अरसा तक नज़र आती रहती है। जो कोई चीज़ कुछ लम्बे समय तक दिखाई दे हम उसे असली मान बैठते हैं। इस से भी लम्बा कोई पिक्चर हो तो उसे भी हम असली मानने लग जाएंगे।

जैसे सूक्ष्म-सृष्टि के अंदर जिसकी गति हो जाती है, स्थिरता प्राप्त हो जाती है, तो उनको वह सच भासने लग जाता है और यह सब नकल भासने लग जाता है। जिस समय सूक्ष्म-शरीर के अंदर हमारा अधिकार हो जाता है, अधिकार हो जाने पर यह जो स्थूल-सृष्टि है, यह सब सच नहीं भासेगा। आप अनुभव करने लगेंगे कि यह सब नकल है, बनावटी है, इसमें कोई सचाई नहीं। यह सब असत्य भासने लग जाता है।

इसी प्रकार उसके पीछे जाकर जब उस आत्मा के अंदर स्थिरता प्राप्त हो जाती है तो वह सूक्ष्म सृष्टि जो हैं, वह भी तुम्हें नकल भासेगा, क्योंकि वह भी पिक्चर ही पिक्चर नज़र आता है, पिक्चर के सिवाय और कुछ नहीं। कागज़ की पिक्चर का क्या मतलब है? कुछ मतलब नहीं। मगर कीमत न होने के बावजूद भी हमें यह सब कुछ सत्य भासता है।

इसी प्रकार हमारे शरीर की भी क्या कीमत है? वही कीमत है। यदि कुछ कीमत होती तो ले जाकर इसे फूकते नहीं। कोई कीमत नहीं। मगर जिसके ज़रिए से इसकी कीमत हम पा रहा है, वह हमारी दृष्टि में नहीं। जब यह चलते फिरते, उठते बैठते, बस कुछ करते देखता है, उस टाईम ही इसकी कीमत है न। यदि यह, यह सब कुछ न करे तो इसकी क्या कीमत हो सकती है? एक कौड़ी की भी कीमत नहीं। अर्थात् बाकी सब चीज़ों

की तो कोई कीमत हो सकती है, यह शरीर तो बदबू देने लगता है। जल्दी से जल्दी इसे हटाने की कोशिश करते हैं। इसकी कोई कीमत नहीं।

मगर जिसके ज़रिए से यह कीमत वाला बना, वह हमारी नज़र में नहीं। वही पदार्थ है जिसके ज़रिए से यह सारी सृष्टि कीमत पा रही है। जिसके ज़रिए से सब कुछ प्रकाशित हो रहा है। जिसके ज़रिए से सृष्टि, सृष्टि बनकर कीमत पाती है, वह हमें नज़र नहीं आता। हमारा शरीर भी जिसके ज़रिए से सिद्ध होता है। वह हमारी नज़र में नहीं है। चलते फिरते यह शरीर तो हमें नज़र आता है, मगर वह आत्मतत्व हमें नज़र नहीं आता।

तो भी उसका अभाव कभी भी सिद्ध नहीं होगा किसी भी सूरत में। किसी भी हालत में उसका अभाव सिद्ध नहीं होता। वह अखण्ड है। हमेशा हमेशा अखण्ड-रूप में वह रहता है, पर उसे हम भूल जाते हैं। वास्तव में सृष्टि में एक वही चैतन्य है, उसके इलावा सृष्टि में दूसरा कोई चैतन्य नहीं। महदूद चैतन्य तुम्हें जो भासता है, उसे हमने महदूद नज़र के कारण महदूद बनाया हुआ है। जैसे हमने संगतरे का रस पिया, एक प्याली बनाकर उसके अंदर संगतरे का पानी भर दिया। प्याली तो उपाधि है। उपाधि को हटाओ तो वह संगतरे का पानी संगतरा ही मानना होगा। इसी प्रकार वह समष्टिगत सब जगह के अंदर भरा हुआ है, जो कि आत्मा-चैतन्य ही है। उसको हमने कल्पना करके शरीर बना लिया। शरीर बनाने पर उसमें आए हुए चैतन्य को हमने 'जीव' कहा और एक महदूद शक्ति मान लिया।

हम और आप शक्तिमान कब होते हैं? जिस समय उस व्यापक चैतन्य-शक्ति का हमें पता नहीं रहता। हम महदूद-शक्ति में ही असल- शक्ति मान लेते हैं। वास्तव में यह अल्प-शक्ति नहीं। अल्प-अल्प उपाधि के ज़रिए से तुम्हें भासती है। इस उपाधि को हटाओ तो वह सर्व-शक्तिमान, सर्वत्र, सब जगह भरा हुआ है। ऐसी कोई जगह नहीं जहां वह न हो। जो शक्ति तुम्हारे अंदर काम करती है, वही शक्ति तमाम सृष्टि के अंदर काम करती है। वही सर्वत्र भरा हुआ है।

पशु-पक्षी, लता-पुष्प, जीव-जन्तु, सूर्य, चंद्र, तारामण्डल जो कुछ भी प्रकाशित है, जो कुछ भी प्रकाशित हो रहा है, जो कुछ भी शक्तिमान भासता है, उसमें वही व्यापक-शक्ति ही काम करती है। तुम्हारे अंदर भी यही शक्ति है जो तमाम मण्डलों को प्रकाशित करती है, वह और कोई शक्ति नहीं होती। मगर वह शक्ति व्यक्तिगत नहीं। यदि हम में से किसी की भी किसी प्रकार से उस यथार्थ-शक्ति पर दृष्टि पड़ जाए तो उसी को

‘ज्ञान’ कहते हैं। जब तक उस आत्म–तत्व पर दृष्टि नहीं पड़ती तब तक वह कोई ज्ञानी–गूनी नहीं। सब अज्ञान में पड़ा फिर रहा है।

चाहे आकाश में उड़ जाओ या ज़मीन के अंदर घुस जाओ, या कुछ भी करो, यह कोई ‘ज्ञान–गून का लक्षण नहीं। यह तो महदूद–शक्तियों को फिर से महदूद बनाकर, खराबी पहुंचाने के सिवाय, कुछ भी नहीं। किसी व्यक्ति में कुछ ज्यादा शक्ति हमें प्रतीत होती है, यह तो मन की महदूदगी होने के ही लक्षण है। मन के महदूद होने पर हमें वह कुछ ज्यादा ही प्रकाशित हुआ भासता है। जिसका मन कुछ स्थिर हो जाता है, जितना भी स्थिर होता है, उतना ही वह शक्ति उसमें ज्यादा भासने लगती है। शक्ति के अंदर कोई कमी बेशी नहीं होती। हमारे अंदर इतनी शक्ति है कि किसी बड़े सिद्ध के अंदर भी नहीं होगी। हम में जितनी शक्ति है और उसे जिसे हम ‘भगवान’ कहते हैं, उसमें भी उतनी ही शक्ति है। पर सब मन की ही बड़बड़ी से पता नहीं चलता है।

जिसका मन कुछ ज़्यादा स्थिर होता है, उसकी शक्ति ज्यादा भासने लग जाती है। जिसका मन कुछ अस्थिर हो जाता है तो उसकी शक्ति भी कुछ कम हो जाती है। यह सब मन की स्थिरता और अस्थिरता पर निर्भर होता है। मन जितना स्थिर होगा, उसमें उतनी ही अधिक शक्ति होगी। ऐसे ही यह जो अष्ट–सिद्धि वगैरह होती है, मन की स्थिरता के कारण उसमें यही शक्ति भासने लगती है।

जो अष्ट सिद्धि बड़े–बड़े योगियों के पास देखा जाता है, वह गंवार जिसे हम कहते हैं, इसके अंदर भी उतनी ही शक्ति है, मगर मन की कमी–बेशी करके मन की बनावट में ही कुछ फर्क होता है। इसलिए शक्ति में कमी–बेशी नज़र आती है, वरना शक्ति में कोई फर्क नहीं। शक्ति तो उतनी ही है, जितनी शक्ति पत्र–पुष्प, पशु–पक्षी में होती है, उतनी ही शक्ति, जिसे हम महान शक्तिमान समझते हैं, उसमें भी होती है।

कहने का मतलब है उस शक्ति को हम महदूद बनाता है कल्पना के ज़रिए से। यह सब बुद्धि और अन्तःकरण की स्थिरता पर निर्भर है। जितना भी हमारी बुद्धि को हम स्थिर बनाएंगे, उतना ही शक्ति अधिक होगी। जितना अस्थिर होंगे, वह शक्ति बिल्कुल भासेगा नहीं। आज हमारा स्थिति यह है कि बुद्धि अत्यंत चंचल होने की वजह से उस शक्ति का हमें बिल्कुल भी पता नहीं लगता। जो वह आत्म–शक्ति तुम्हारे अंदर काम करती है, वह आत्मा भी हमें नहीं भासती है।

आत्मा इसलिए नहीं भासता, क्योंकि हमारी बुद्धि अत्यंत चंचल है। चंचल होने की वजह से हमें उस शक्ति का बिल्कुल भी पता नहीं लगता। इसीलिए महात्मा लोगों ने या ऋषि लोगों ने कहा कि उस शक्ति का पता तुम्हें उसी सूरत में चलेगा कि जिस अवस्था को हम समाधि की अवस्था कहते हैं। समाधि-अवस्था में स्थिर होने पर उस शक्ति का पता लगेगा। बुद्धि स्थिर होने पर मुकम्मल तौर पर उस शक्ति का पता लग जाता है। उससे पहले पता नहीं लगेगा।

वह समाधि किस तरह मिलेगा? जब बुद्धि में छिपा हुआ जितना भी पिक्चर है, उसको लय करने का कोशिश करेगा। जो उसे डायरैक्ट तौर पर लय करने में असमर्थ है तो वह उन पिक्चरों को तबादला करने की कोशिश करे। टाईम टाईम पर भिन्न भिन्न प्रकार के तमोगुणी और सतोगुणी संस्कारों से भरी हुई जो पिक्चरें हैं, इन पिक्चरों के स्थान पर हम सतोगुणी संस्कारों तथा ईश्वर भक्ति की पिक्चरों को भरने की कोशिश करेंगे। ज्यों ज्यों ईश्वर भक्ति की पिक्चर भर जाएगा, त्यों-त्यों बुद्धि स्थिर होने लग जाता है। ज्यों-ज्यों स्थिर होता जाएगा और अखीरी जाकर वह भक्ति-भुक्ति भी सब छूट जाएगा। और क्या बचेगा? एक मात्र अखण्ड आत्म-तत्व बचा रहेगा। बुद्धि अत्यंत शुद्ध हो जाता है, बुद्धि की म्लीनता दूर हो जाती है, बुद्धि स्थिर हो जाती है।

बुद्धि की मलिनता क्या है? पिक्चर ही बुद्धि की मलिनता है। वह पिक्चर तीन किस्त का होता है - रजोगुणी, तमोगुणी और सतोगुणी और विशुद्ध होकर करोड़ों की शक्ल धारण कर लेता है। यह सब बुद्धि के अंदर छिपा हुआ है। जब हम अभ्यास द्वारा वह बुद्धि में छिपी पिक्चरों को बिल्कुल खत्म कर देते हैं, साफ कर देते हैं तो बुद्धि ही नहीं रहेगा। और क्या रहेगा? पिक्चर खत्म होते ही बुद्धि खत्म हो जाएगा। फिर क्या बचेगा? यह आत्म-चैतन्य ही बचा रहेगा। वह आत्म-चैतन्य ही हमारा मकान है। जब तक वहां पहुंचेगे नहीं, तब तक हमारी ज़िंदगी बिल्कुल अधूरा माना जाएगा।

उसकी प्राप्ति करने के लिए कहीं जाने की ज़रूरत नहीं। किसी किस्म की बड़ी भारी ज़बरदस्ती करने की ज़रूरत नहीं। बुद्धि को स्थिर करने की, शुद्ध करने की ही ज़रूरत है। बुद्धि को शुद्ध करने का अभ्यास करो। धीरे-धीरे बिल्कुल अचानक उसके अंदर हमें स्थिरता प्राप्त होगी, क्योंकि वह बुद्धि के अंदर काम कर रहा है न। जिसकी हम प्राप्ति करना चाहते हैं, वह कहां है? वह बुद्धि में ही तो है। जिसके ज़रिए तुम उसकी प्राप्ति करना चाहते

हो, उस बुद्धि के अंदर वह आत्म-चैतन्य छिपा हुआ है। ऐसा कोई स्थान नहीं कि जिस जगह पर वह आत्म-चैतन्य व हो। हर पदार्थ में समान-रूप से भरा हुआ होने के कारण जिस प्रकार से, जिस साधन से तुम उसे प्राप्त करने की कोशिश करोगे, उस साधन में भी वह मौजूद होगा।

बिल्कुल विशिष्ट साधना हम कर रहे है, उसमें भी वह मौजूद है। हम जिस साधना से उसे ढूंढने का प्रयत्न करेंगे तो उस साधना के अंदर भी वह मौजूद होगा। चैतन्य-शक्ति भी तो उसी की होगी, उसके बिना तो कोई साधना हो ही नहीं सकती। चाहे कोई साधना है, तमोगुणी साधना है या रजोगुणी साधना है या सतोगुणी साधना समझो, उस सब में, वही आत्मा का बीज ही तो काम कर रहा है।

उपाधि भिन्न भिन्न होती है। वह बुद्धि के संस्कार के ज़रिए से, पिक्चर के ज़रिए से होती है। वह पिक्चर बिल्कुल खत्म हो जाएगा तो वह आत्मा तत्व, आत्म-तत्व ही शेष रहेगा। वहीं जाकर हमें शांति मिलेगा और कहीं भी शांति नहीं मिल सकता, क्योंकि मनुष्य अवस्था के अंदर न ही तुम कुछ करते हो, न ही सृष्टि के अंदर कोई बंधन होगा, न ही सृष्टि तुम्हें कोई बंधन बना सकेगी। तुम बिल्कुल स्वतंत्र होगा। वह स्वतंत्र अवस्था है, इसके अलावा कोई स्वतंत्र अवस्था नहीं। जब तक दुनिया के अंदर तुम भटकते रहोगे, तभी तक बंधन है, यह परतंत्र अवस्था है। किसको परतंत्रता है? कल्पना करने वालो को।

जैसे मैने पहले कहा, कल्पना के सिवाय कोई पिक्चर नहीं, कोई बंधन नहीं। इसके इलावा दुनिया में न कोई सृष्टि बना, न बन सकता है। इस यथार्थ के अंदर जो-जो शक्ति तुम्हें भासता है वह आत्म ही की शक्ति है। आत्म की ही शक्ति है न और कुछ भी नहीं। वह आत्म-शक्ति हमें नज़र नहीं आती, हम भूल गया। उस आत्म-शक्ति को कल्पना कर-कर के महदूद बनाया और अपने आप को अल्पज्ञ मानने लगा। अल्पज्ञ मानने के कारण सुख-दुख आदि भोगने वाला हमने सब अपने ऊपर लाद लिया। यह सब कल्पना के ज़रिए से है।

इसलिये हमारा कहने का मतलब है कि यथार्थता को पहचानो और बुद्धि को शुद्ध करने का प्रयत्न करो। बुद्धि के सिवाय और किसी जोनी में यह खूबी नहीं। इस लिए इस रहस्य को समझना चाहिये। मगर पशु-पक्षी के अंदर समझ होने के बावजूद वह उसे पहचान नहीं सकता। उसकी बुद्धि इतनी विकसित नहीं क्योंकि मनुष्य के अंदर सतोगुणी

पिक्चर ज्यादा है। बाकी जो है वह तमोगुणी प्रधान पिक्चर उसके अंदर छिपा होता है, इसीलिए वह यथार्थ को पहचान नहीं सकता।

सतोगुणी पिक्चर के अंदर प्रकाश कुछ ज्यादा पड़ता है। उस प्रकाश के ज़रिए हम आगे बढ़ते जाएंगे तो लाज़िम है कि उसके अंदर अचानक ही, किसी भी टाईम, आत्म-तत्व हमारे सामने आ जाएगा। बुद्धि को शुद्ध करने का कोई लिमिट (सीमा) नहीं। किस टाइम पर? यह कोई निर्णय नहीं कर सकता। भले ही पांच मिंट में शुद्ध हो जाए, कुछ गारंटी नहीं। भले ही हज़ारों जन्म तक भी शुद्ध न हो। मगर प्रयत्न करते रहने पर, किसी न किसी टाईम वह शुद्ध और स्थिर हो ही जाएगा। शुद्ध होते ही आत्म-चैतन्य ही आत्म-चैतन्य बाकी बचा रहेगा। और कुछ भी नहीं। उस को शुद्ध किए बिना यथार्थ को कभी भी पहचान नहीं सकता। इससे अधिक कुछ भी नहीं। यह जो अंहकार है, उसने किया, इसने किया, यह कल्पना के ज़रिए ही हो रहा है। वास्तव में वह शक्ति जो है वह समष्टिगत है, सबके अंदर समान-रूप से रहती है। लेकिन हमने इसे महदूद बना रखवा है। महदूद होने के कारण हम अल्पज्ञ माना जाता है। उस महदूद-अवस्था को छोड़ दो, तो वही महान शक्ति होगा, वही लामहदूद बन जोएगा और कोई शक्तिमान नहीं। सर्वशक्तिमान कहीं ऊपर से नहीं आता। कल्पना के ज़रिए हमने अपने आप को महदूद बना रखवा है।

– ॐ –